Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
October to December 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVIII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भारतीय ज्ञान परंपरा और अर्थशास्त्र

डॉ. ममता पंवार*

* सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र) प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस, शास. माधव महाविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – यह शोध पत्र भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित आर्थिक विचारों और सिद्धांतों की पड़ताल करता है। यह तर्क देता है कि आधुनिक अर्थशास्त्र के विपरीत, भारतीय दृष्टिकोण में आर्थिक गतिविधियों को धर्म (नैतिकता), अर्थ (धन), काम (इच्छा), और मोक्ष (मुक्ति) के चौगुटे (चतुर्वर्ग) के व्यापक ढांचे के भीतर देखा गया है। इस पत्र में प्राचीन भारतीय ग्रंथों जैसे वेदों, उपनिषदों, महाभारत, रामायण, और विशेष रूप से कौटिल्य के अर्थशास्त्र में पाए गए आर्थिक सिद्धांतों का विश्लेषण किया गया है। इसका उद्देश्य यह दिखाना है कि प्राचीन भारतीय विचारकों ने न केवल आर्थिक पहलुओं पर गहन चिंतन किया, बल्कि एक ऐसे समावेशी और संतुलित मॉडल का प्रस्ताव भी रखा, जो व्यक्तिगत समृद्धि के साथ-साथ सामाजिक कल्याण और पारिस्थितिक संतुलन पर भी जोर देता है। यह शोध इस बात पर भी प्रकाश डालेगा कि आधुनिक अर्थशास्त्र के समक्ष मौजूद चुनौतियों, जैसे पर्यावरणीय गिरावट, असमानता और नैतिक शून्यता के समाधान के लिए भारतीय ज्ञान परंपरा से क्या सीखा जा सकता है।

अर्थशास्त्र का अध्ययन मानव समाज के लिए उतना ही पुराना है जितना कि सभ्यता। जबकि आधुनिक अर्थशास्त्र को अक्सर एडम स्मिथ के 'द वेल्थ ऑफ नेशंस' (1776) से उत्पन्न माना जाता है, भारतीय उपमहाद्वीप में आर्थिक विचारों का एक समृद्ध और जीवंत इतिहास रहा है, जो सहस्राब्दियों पुराना है। यह ज्ञान परंपरा न केवल धन और राजस्व के प्रबंधन तक सीमित थी, बल्कि इसमें नैतिकता, सामाजिक व्यवस्था और जीवन के अंतिम लक्ष्यों का भी समावेश था। भारतीय चिंतन में अर्थशास्त्र को अर्थ के रूप में जाना जाता है, जो जीवन के चार पुरुषार्थों में से एक है। पुरुषार्थ शब्द का अर्थ है, मानव जीवन के चार परम लक्ष्य। ये चार लक्ष्य हैंरू धर्म (नैतिक और धार्मिक कर्तव्य), अर्थ (आर्थिक समृद्धि), काम (इच्छाओं की पूर्ति), और मोक्ष (आध्यात्मिक मुक्ति)। इस ढांचे में, अर्थ को धर्म के नियमों के भीतर प्राप्त किया जाना चाहिए, जो इसे एक नैतिक और सामाजिक संदर्भ प्रदान करता है।

प्राचीन भारतीय ग्रंथों में आर्थिक विचार – भारतीय ज्ञान परंपरा में, आर्थिक सिद्धांतों को अलग से एक विषय के रूप में नहीं पढ़ाया गया था, बल्कि यह जीवन के अन्य पहलुओं के साथ गहराई से एकीकृत था।

वेदों और उपनिषदों में आर्थिक विचार – ऋग्वेद में व्यापार, कृषि, और पशुपालन से संबंधित संदर्भ मिलते हैं। यह समृद्धि और धन की कामना करता है, लेकिन इसे नैतिक और धार्मिक अनुष्ठानों से जोड़ता है। यजुर्वेद में कृषि पद्धतियों, पशुधन के महत्व और विनिमय के सिद्धांतों का उल्लेख है। अथर्ववेद में समृद्धि और भौतिक कल्याण के लिए प्रार्थनाएं हैं, साथ ही कृषि की उन्नति और व्यापार की सुरक्षा पर भी जोर दिया गया है। उपनिषद भौतिकता की सीमाओं पर बल देते हैं, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि वे धन का तिरस्कार करते हैं, बल्कि वे यह समझाते हैं कि धन को केवल अंतिम लक्ष्य नहीं माना जाना चाहिए। ईश उपनिषद में कहा गया है, 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः' (त्याग के साथ उपभोग करो)। यह सिद्धांत उपभोग में संयम और धन के संचय में परोपकार की भावना को प्रोत्साहित करता है।

महाभारत और रामायण में राजनैतिक-आर्थिक संरचना – महाभारत के शांति पर्व में, भीष्म पितामह युधिष्ठिर को राजधर्म और अर्थनीति के बारे में विस्तृत उपदेश देते हैं। इसमें कराधान, सार्वजनिक वित्त, और न्यायपूर्ण शासन के सिद्धांतों का वर्णन है। राजा का कर्तव्य प्रजा की संपत्ति की रक्षा करना और उन्हें आर्थिक रूप से समृद्ध बनाना था। रामायण में भी राम राज्य की अवधारणा एक आदर्श आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था का प्रतीक है, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति खुशहाल और समृद्ध था और कोई भी गरीब नहीं था। यह एक ऐसे राज्य की कल्पना है जहाँ धन का वितरण न्यायपूर्ण था और समाज में कोई असमानता नहीं थी।

कौटिल्य का अर्थशास्त्र: एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण – प्राचीन भारतीय आर्थिक विचारों का सबसे व्यवस्थित और वैज्ञानिक प्रतिनिधित्व चाणक्य के रूप में भी जाने जाने वाले कौटिल्य के अर्थशास्त्र में मिलता है। यह ग्रंथ, जो चौथी शताब्दी ईसा पूर्व के आसपास लिखा गया था, राज्य शिल्प , सैन्य रणनीति, और आर्थिक नीति पर एक व्यापक मैनुअल है। कौटिल्य का अर्थशास्त्र राजनीति और अर्थनीति के बीच एक गहरा संबंध स्थापित करता है।

मुख्य सिद्धांत

सप्तांग सिद्धांत – कौटिल्य के अनुसार, एक राज्य सात अंगों से मिलकर बनता है: स्वामी (राजा), अमात्य (मंत्री), जनपद (जनसंख्या और क्षेत्र), दुर्ग (किला), कोष (कोषालय), दण्ड (सेना), और मित्र (सहयोगी)। इनमें से, कोष (कोषालय या खजाना) को सबसे महत्वपूर्ण माना गया है, क्योंकि यह राज्य की स्थिरता और शक्ति का आधार है।

राज्य की भूमिका– कौटिल्य राज्य को केवल कानून और व्यवस्था बनाए रखने वाले के रूप में नहीं देखते थे, बल्कि वे उसे आर्थिक गतिविधियों को नियंत्रित और निर्देशित करने वाले के रूप में भी देखते थे। राज्य को कृषि को बढ़ावा देना चाहिए, सिंचाई की व्यवस्था करनी चाहिए, व्यापार मार्गों को सुरक्षित करना चाहिए, और सार्वजनिक निर्माण कार्यों जैसे सड़कों और

पुलों का निर्माण करना चाहिए।

कराधान– कराधान को एक न्यायसंगत और पारदर्शी प्रणाली के रूप में वर्णित किया गया है। कौटिल्य का मानना था कि कर इस तरह से लगाए जाने चाहिए कि वे उत्पादन को बाधित न करें, ठीक उसी तरह जैसे फ्लूलों से मधु इकट्ठा करने वाली मधुमक्खीष।

व्यापार और वाणिज्य– कौटिल्य ने व्यापार को विनियमित करने और धोखाधड़ी को रोकने के लिए नियमों का सुझाव दिया। उन्होंने माप और तौल के मानकों को मानकीकृत करने, बाजारों का निरीक्षण करने और एकाधिकार को रोकने के महत्व पर बल दिया।

आधुनिक अर्थशास्त्र से तुलना और भारतीय मॉडल की प्रासंगिकता– आधुनिक अर्थशास्त्र अक्सर व्यक्तिवादी दृष्टिकोण पर आधारित होता है, जहाँ उपभोक्ता की अधिकतम उपयोगिता और फर्म की अधिकतम लाभप्रदता प्रमुख लक्ष्य हैं। इसके विपरीत, भारतीय आर्थिक मॉडल सामाजिक कल्याण, नैतिकता, और पर्यावरणीय स्थिरता को केंद्र में रखता है।

भिन्नताएं

उद्देश्य– आधुनिक अर्थशास्त्र का मुख्य उद्देश्य आर्थिक विकास (जीडीपी वृद्धि) और धन सृजन है, जबकि भारतीय परंपरा में उद्देश्य धर्म (नैतिकता) के साथ अर्थ (धन) का सामंजस्य स्थापित करना है।

नैतिकता– आधुनिक अर्थशास्त्र में, नैतिकता अक्सर एक बाहरी कारक होती है, जबकि भारतीय मॉडल में यह अंतर्निहित है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में राजा का कर्तव्य न केवल धन कमाना है, बल्कि प्रजा के कल्याण को भी सुनिश्चित करना है।

पारिस्थितिक दृष्टिकोण– आधुनिक आर्थिक मॉडल अक्सर प्राकृतिक संसाधनों को बाहरी कारक के रूप में मानता है, जिससे पर्यावरणीय क्षति होती है। भारतीय परंपरा में, प्रकृति को पूजनीय माना जाता था और इसका सम्मान करना धार्मिक कर्तव्य का हिस्सा था। अथर्ववेद में, भूमि को माता के रूप में संदर्भित किया गया है।

निष्कर्ष – भारतीय ज्ञान परंपरा में अर्थशास्त्र का अध्ययन केवल धन के संचय तक सीमित नहीं था, बल्कि यह एक समग्र और समावेशी दृष्टिकोण था जो मानव जीवन के सभी पहलुओं को छूता था। कौटिल्य के अर्थशास्त्र जैसे ग्रंथ यह दर्शाते हैं कि प्राचीन भारतीय विचारकों ने एक जटिल और परिष्कृत आर्थिक प्रणाली का विकास किया था। यह प्रणाली न केवल व्यावहारिक और कुशल थी, बल्कि नैतिक और सामाजिक रूप से भी जिम्मेदार थी। आधुनिक अर्थशास्त्र, जो अक्सर असमानता, पर्यावरणीय संकट और नैतिक शून्यता जैसी चुनौतियों का सामना कर रहा है, भारतीय ज्ञान परंपरा से महत्वपूर्ण सबक सीख सकता है।

समृद्धि को केवल भौतिक धन से मापने के बजाय, भारतीय मॉडल हमें सिखाता है कि समृद्धि का वास्तविक अर्थ व्यक्तिगत कल्याण, सामाजिक सद्भाव और प्रकृति के साथ संतुलन में निहित है। इस प्रकार, भारतीय ज्ञान परंपरा से प्राप्त अंतर्दृष्टि एक अधिक टिकाऊ, न्यायपूर्ण और मानवीय आर्थिक प्रणाली का मार्ग प्रशस्त कर सकती है। यह शोध पत्र यह साबित करता है कि भारत के पास आर्थिक विचारों का एक अनमोल खजाना है, जिसे आज के विश्व के लिए प्रासंगिक बनाने की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. कौटिल्य, अर्थशास्त्र।
2. महाभारत, शांति पर्व।
3. उपनिषद।
4. वेदा।
5. दासगुप्ता, सुरेंद्र: 'कौटिल्य का अर्थशास्त्र: प्राचीन भारत में राजव्यवस्था और अर्थशास्त्र।'
6. मेहता, एल.के. : 'वैदिक काल में आर्थिक विचार।'

****